आसा दी वार

१ੴ सतिगुर प्रसादि॥

आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥

हरि अम्रिति भिंनै लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥

मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥

गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥

जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥१॥

१ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि॥

आसा महला १ ॥

वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥

सलोकु मः१ ॥

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥

जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥

महला २ ॥

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हिजार ॥

एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥

मः१ ॥

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥

छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥

खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥

फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥

पउड़ी ॥

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥

दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥

दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥

तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥

करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥

(छंत) हरि प्रेम बानी मनु मार्या अणियाले अणिया राम राजे ॥

जिसु लागी पीर पिरंम की सो जानै जरिया ॥

जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरिया ॥

जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जिगु दुतरु तरिया ॥२॥

सलोकु मः१ ॥

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥

सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥

सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥

सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥

सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥

सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥

सचे तुधु आखहि लिख करोड़ि ॥

सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥

सची तेरी सिफति सची सालाह ॥

सची तेरी कुदरति सचे पातसिाह ॥

नानक सचु धिआइनि सचु ॥

जो मरि जिमे सु कचु निकचु ॥१॥

मः१ ॥

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥

वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥

वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥

वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥

वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥

वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥

वडी वडिआई जा आपे आपि ॥

नानक कार न कथनी जाइ ॥

कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥

NITNEM SAHIB www.nitnempath.com

महला २ ॥

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥

इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥

इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥

एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥

नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥

पउड़ी ॥

नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥

ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥

थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥

तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥

लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥

(छंत) हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविन्द रंगा राम राजे ॥

गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥

मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥

मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥३॥

सलोक मः१ ॥

विसमादु नाद विसमादु वेद ॥

विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥

विसमादु रूप विसमादु रंग ॥

विसमादु नागे फिरहि जंत ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

वसिमादु पउणु वसिमादु पाणी ॥

वसिमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥

वसिमादु धरती वसिमादु खाणी ॥

वसिमादु सादि लगहि पराणी ॥

वसिमादु संजोगु वसिमादु वजिोगु ॥

वसिमादु भुख वसिमादु भोगु ॥

वसिमादु सफिति वसिमादु सालाह ॥

वसिमादु उझड़ वसिमादु राह ॥

वसिमादु नेड़ै वसिमादु दूरि॥

वसिमादु देखै हाजरा हजूरि॥

वेखि विडाणु रहिआ वसिमादु ॥

नानक बुझणु पूरै भागि॥१॥

मः१ ॥

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥

कुदरति पाताली आकासी कुदरति सिरब आकारु ॥

कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सिरब वीचारु ॥

कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥

पउड़ी ॥
आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥

(छंत) दीन दयाल सुनि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥
हउ मागउ सरनि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥
भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥
जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥१॥८॥

सलोक मः१ ॥

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥

भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥

भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥

भै विचि धरती दबी भारि ॥

भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥

भै विचि राजा धरम दुआरु ॥

भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥

कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥

भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥

भै विचि आडाणे आकास ॥

भै विचि जोध महाबल सूर ॥

भै विचि आवहि जावहि पूर ॥

सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥

नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥

मः१ ॥

नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥

केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥

केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥

बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥

गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥

लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥

जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥

गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥

करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥

पउड़ी ॥

नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥

एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥

सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥

सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥

जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥

(छंत) आसा महला ४ ॥

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिया हरि सजनु लधा राम राजे ॥

कंचन कायआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधि ॥
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥
धुरि भाग वडे हरि पायआ नानक रसि गुधा ॥१॥

सलोक मः१ ॥
घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥
सगली धरती मालु धनु वरतणि सिरब जंजाल ॥
नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥

मः१ ॥
वाइनि चेले नचनि गुर ॥
पैर हलाइनि फेरन्हि सिरि ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥

गावनि सीता राजे राम ॥
नरिभउ नरिंकारु सचु नामु ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
भंनी रैणि जिन्हि मनि चाउ ॥
सखी सखिआ गुर वीचारि ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥
कोलू चरखा चकी चकु ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
पंखी भउदीआ लैनि नि साह ॥
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जिंत ॥
नानक भउदआि गणत न अंत ॥
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥
पइऐ करिति निचै सभु कोइ ॥
नचि निचि हसहि चलहि से रोइ ॥
उडनि जाही सधि न होहि ॥

नचणु कुदणु मन का चाउ ॥

नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥

पउड़ी ॥

नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥

जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥

जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥

जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥

को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥

(छंत) पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥

हरि हरि नामु चेताय गुर हरि मारगि चाली ॥

मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥

जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलि्या बनवाली ॥२॥

सलोक मः१ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥

बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥

हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥

तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥
जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥
सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥
सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥
चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥
जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥

मः१ ॥

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥

पउड़ी ॥

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥

सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥

सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥

उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥

जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥

(छंत) गुरमुखि प्यारे आइ मिलु मै चिरी विछुन्ने राम राजे ॥

मेरा मनु तनु बहुतु बैराग्या हरि नैन रसि भिन्ने ॥

मै हरि प्रभु प्यारा दसि गुरु मिलि हरि मनु मन्ने ॥

हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥३॥

सलोक मः१ ॥

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥

हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ ॥

हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥

हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥

हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥

हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥

हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥

हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥

हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥

हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥

मोख मुकति की सार न जाणा ॥

हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥

हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥

हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥

गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥

नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥

जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥

महला २ ॥

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥

हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥

हउमै कथिहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥

पउड़ी ॥
सेव कीती संतोखीई.जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सिवाइआ ॥
वडिआई वडा पाइआ ॥७॥

(छंत) गुर अंमृत भिन्नी देहुरी अंमृतु बुरके राम राजे ॥
जिना गुरबानी मनि भाईआ अंमृति छकि छिके ॥
गुर तुठै हरि पायिआ चूके धक धके ॥
हरि जिनु हरि हरि होया नानकु हरि इके ॥४॥२॥९॥

सलोक मः१ ॥

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥

दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥

अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥

सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥

नानक जंत उपाइ कै समाले सभनाह ॥

जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥

सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥

तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥

नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥

मः१ ॥

लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥

लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥

लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥

लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥

जनि किरतै करणा कीआ लखिआि आवण जाणु ॥

नानक मती मथिआि करमु सचा नीसाणु ॥२॥

पउड़ी ॥

सचा साहबि एकु तूं जनि सिचो सचु वरताइआ ॥

जसिु तूं देह तिसि मलिै सचु ता तन्हिी सचु कमाइआ ॥

सतगिुर मिलिऐि सचु पाइआ जन्हि कै हरिदै सचु वसाइआ ॥

मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥

वचि दिुनीआ काहे आइआ ॥८॥

(छंत) आसा महला ४ ॥

हर अंमृत भगत भिंडार है गुर सतगिुर पासे राम राजे ॥

गुरु सतगिुरु सचा साहु है सखि देइ हर रासे ॥

धनु धन्नु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥

जनु नानकु गुरु तनिी पायआ जनि धुर लिखितु ललिाट लिखिासे

॥१॥

सलोकु मः१ ॥

पड़ पिड़ गिडी लदीअह पिड़ पिड़ भिरीअह साथ ॥

पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥

पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥

नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥

मः१ ॥

लखि लिखि पड़िआ ॥

तेता कड़िआ ॥

बहु तीरथ भविआ ॥

तेतो लविआ ॥

बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥

सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥

अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥

बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥

बसत्र न पहरै ॥

अहनिसि कहरै ॥

मोनि विगूता ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

कउि जागै गुर बनिु सूता ॥

पग उपेताणा ॥

अपणा कीआ कमाणा ॥

अलु मलु खाई सरि छिाई पाई ॥

मूरख अंधै पत गिवाई ॥

वणिु नावै कछिु थाइ न पाई ॥

रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥

अंधु न जाणै फरि पिछुताणी ॥

सतगिुरु भेटे सो सुखु पाए ॥

हर का नामु मंन वसाए ॥

नानक नदर करे सो पाए ॥

आस अंदेसे ते नहि केवलु हउमै सबद जलाए ॥२॥

पउड़ी ॥

भगत तेरै मन भावदे दर सोहन कीरत गावदे ॥

नानक करमा बाहरे दर ढोअ न लहन्ही धावदे ॥

इक मूलु न बुझन्ह आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥

हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥
तन्हि मंगा जि तुझै धिआइदे ॥९॥

(छंत) सचु साहु हमारा तूं धनी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥
सभ भांडे तुधै साज्या विचि वसतु हरि थारा ॥
जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै क्या कोयी करे वेचारा ॥
जन नानक कउ हरि बखस्या हरि भगति भंडारा ॥२॥

सलोकु मः१ ॥
कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

मः१ ॥

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥

कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥

सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥

नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥

सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥

धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥

सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥

दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥

सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥

सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥

नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥

पउड़ी ॥

दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥

कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥

फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥
जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥
मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥

(छंत) हम क्या गुन तेरे विथिरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥
हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥
हम मूरख किछूय न जाणहा किव पावह पारो ॥
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनेहारो ॥३॥

सलोकु मः१ ॥
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि॥
जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥
नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥
भै विचि खुमबि चिड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥
नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

मः१ ॥

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सकिदारु ॥
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥
धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥

मः१ ॥

वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥
सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥
अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥

www.nitnempath.com

पउड़ी ॥

धुरि किरमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥

एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥

इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥

गुर करिपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥

सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥

(छंत) ज्यु भावै त्यु राखि लै हम सरनि प्रिभ आए राम राजे ॥

हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥

हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥

जनु नानकु दासु हरि कांढ्या हरि पैज रखाए ॥४॥३॥१०॥

सलोकु मः१ ॥

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥

तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥

बलिहारी कुदरति विसआ ॥

तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥

रहाउ ॥

जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ
॥
तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ
॥
कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ
॥२॥ मः२ ॥
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥
मः२ ॥
एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥

मः१ ॥

कुम्भे बधा जलु रहै जल बिनु कुम्भु न होइ ॥

गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥

पउड़ी ॥

पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥

जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥

ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥

पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥

मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

(छंत) आसा महला ४ ॥

जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥

अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥

हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥

जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥

सलोकु मः१ ॥

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥

जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥

सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥

त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥

दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥

कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥

मः१ ॥

साम कहै सेत्मबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥

सभु को सचि समावै ॥

रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥

राम नामु देवा महि सूरु ॥

नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥

नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥

जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥

पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥

कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥

नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥

चारे वेद होए सचिआर ॥

पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥

भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥

तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥

पउड़ी ॥

सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥

जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥

खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥

सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥

करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥

(छंत) जिनी ऐसा हरि नामु न चेत्यो से काहे जगि आए राम राजे ॥

इहु मानस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥
हुनि वितै हरि नामु न बीज्यो अगै भुखा क्या खाए ॥
मनमुखा नो फिरि जिनमु है नानक हरि भाए ॥२॥

सलोकु मः१ ॥

सिमिल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥
ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरिसे कितु ॥
फल फिके फुल बकबके कमि न आवहि पित ॥
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥
सीसि निविाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥

मः१ ॥

पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥

त्रैपाल तहिाल बचािरं ॥
गलमािला तलिकु ललिाटं ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जे जाणसबि्रहमं करमं ॥
सभफिोकट नसिचिउ करमं ॥
कहु नानक नहिचिउ धआिवै ॥
वणिु सतगिुर वाट न पावै ॥२॥

पउड़ी ॥
कपड़ु रूपु सुहावणा छडदिुनीआ अंदरजिावणा ॥
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥
हुकम कीए मनभिावदे राहभिीड़ै अगै जावणा ॥
नंगा दोजकचिालआि ता दसिै खरा डरावणा ॥
करअिउगण पछोतावणा ॥१४॥

(छंत) तूं हरतिेरा सभु को सभतिुधु उपाए राम राजे ॥
कछिु हाथकिसिै दै कछिु नाही सभचिलह चलाए ॥

जनि तूं मेलह प्यारे से तुधु मलिह जो हरि मनि भाए ॥

जन नानक सतिगुरु भेट्या हरि नामि तिराए ॥३॥

सलोकु मः१ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥

एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥

ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥

धंनु सु माणस नानका जो गलि चिले पाइ ॥

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥

सखिा कंनि चिड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥

ओहु मुआ ओहु झड़ि पिइआ वेतगा गइआ ॥१॥

मः१ ॥

लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि॥

लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनिसु जीअ नालि॥

तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥

कुहि बिकरा रंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥

होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥

मः१ ॥

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥

मः१ ॥

तगु न इंद्री तगु न नारी ॥
भलके थुक पवै निति दाड़ी ॥
तगु न पैरी तगु न हथी ॥
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥
वेतगा आपे वतै ॥
वटि धागे अवरा घतै ॥
लै भाड़ि करे वीआहु ॥
कढि कागलु दसे राहु ॥
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥
मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥

पउड़ी ॥

साहबि होइ दइआलु करिपा करे ता साई कार कराइसी ॥

सो सेवकु सेवा करे जसि नो हुकमु मनाइसी ॥

हुकमि मिंनऐि होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥

खसमै भावै सो करे मनहु चंदिआि सो फलु पाइसी ॥

ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥

(छंत) कोयी गावै रागी नादी बेदी बहु भांतिकिरि निही हरि हिरि भीजै राम राजे ॥

जनिा अंतरि किपटु वकिारु है तनिा रोइ क्या कीजै ॥

हरि किरता सभु कछिु जाणदा सरिरिोग हथु दीजै ॥

जनिा नानक गुरमुखि हरिदा सुधु है हरि भिगति हिरि लीजै ॥४॥४॥११॥

सलोक मः१ ॥

गऊ बरिाहमण कउ करु लावहु गोबरि तिरणु न जाई ॥

धोती टकिा तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥

अंतरि पूजा पड़हि कितेबा संजमु तुरका भाई ॥

छोडीले पाखंडा ॥

नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥

मः१ ॥

माणस खाणे करहि निवाज ॥

छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥

तनि घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥

उन्हा भि आवहि ओई साद ॥

कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥

कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥

सरम धरम का डेरा दूरि ॥

नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥

मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥

हथि छुरी जगत कासाई ॥

नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥

मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥

अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

चउके उपरि किसै न जाणा ॥

दे कै चउका कढी कार ॥

उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥

मतु भिटै वे मतु भिटै ॥

इहु अंनु असाडा फिटै ॥

तनि फिटै फेड़ करेनि ॥

मनि जूठै चुली भरेनि ॥

कहु नानक सचु धिआईऐ ॥

सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥

पउड़ी ॥

चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥

आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥

वडहु वडा वड मेदनी सिरि सिरि धंधै लाइदा ॥

नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥

दरि मंगनि भिखि न पाइदा ॥१६॥

(छंत) आसा महला ४ ॥

जनि अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ स्याने राम राजे ॥
जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥
हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि मानु नमिाणे ॥
जन नानक नामु दीबानु है हरि तानु सताणे ॥१॥

सलोकु मः१ ॥

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितिरी देइ ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितिरी चोर करेइ ॥
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥

मः१ ॥

जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥
जूठे जूठा मुखि वसै निति निति होइ खुआरु ॥
सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥

पउड़ी ॥

तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥

कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥

चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥

करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥

जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥

(छंत) जथि जाय बहै मेरा सतगिरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥

गुरसखिी सो थानु भाल्या लै धूरि मुखि लावा ॥

गुरसखिा की घाल थाय पई जनि हरि नामु ध्यावा ॥

जनि नानकु सतगिुरु पूज्या तनि हरि पूज करावा ॥२॥

सलोकु मः१ ॥

जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥

गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥

जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥

पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥

सूतकु कपिड करि रिखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥
नानक सूतकु एव न उतरै गपिआनु उतारे धोइ ॥१॥

मः१ ॥

मन का सूतकु लोभु है जहिवा सूतकु कूड़ु ॥
अखी सूतकु वेखणा पर त्रअि पर धन रूपु ॥
कंनी सूतकु कंनपि पै लाइतबारी खाहपि॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरपि जाहपि॥२॥

मः१ ॥

सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥
जमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥
खाणा पीणा पवत्रि्रु है दतिोनु रजिकु स्मबाहपि॥
नानक जनि्ही गुरमुखपि बुझ़िआ तनि्हा सूतकु नाहपि॥३॥

पउड़ी ॥

सतगिुरु वडा करपि सालाहीऐ जसिु वचिपि वडीआ वडआिईआ ॥
सहपि मेिले ता नदरी आईआ ॥
जा तसिु भाणा ता मनपि वसाईआ ॥

करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ
॥
सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥
(छंत) गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे
॥
करि सेवहि पूरा सतगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥
गुरसिखा की भुख सभ गई तिनि पिछै होर खाइ घनेरी ॥
जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी
॥३॥
सलोकु मः१ ॥
पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥
सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥
सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सिलोकु ॥
कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥
अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरितु
॥

ता होआ पाकु पवितु ॥

पापी सचि तनु गडिआ थुका पईआ ततु ॥

जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥

नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥

मः१ ॥

भंडि जमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥

भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥

भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जमहि राजान ॥

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥

नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥

नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥

पउड़ी ॥

सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥

कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥

जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥

मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥

मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥

(छंत) गुरसिखा मनि वाधाईआ जिनि मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥

कोयी करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥

हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिना मेरा सतिगुरु तुठा ॥

जन नानकु हरि हरि होया हरि हरि मनि वुठा ॥४॥५॥१२॥

सलोकु मः१ ॥

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥

फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥

फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥

फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥

मः१ ॥

अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥

अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥

जन्हि पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥

तन्हि नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥

रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥

परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥

दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥

दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥

दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥२॥

पउड़ी ॥

आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥

देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥

जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥

जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥

आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥

(छंत) आसा महला ४ ॥

जिना भेट्या मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे

॥

तसि की त्रसिना भुख सभ उतरै जो हरनिामु ध्यावै ॥
जो हरहिरनिामु ध्याइदे तनि जमु नेड़नि आवै ॥
जन नानक कउ हरकि्रपिा करनिति जपै हरनिामु हरनिामि
तरावै ॥१॥

सलोकु महला २ ॥
एह कनिेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ॥
चंगै चंगा करमिंने मंदै मंदा होइ ॥
आसकु एहु न आखीऐ जलिेखै वरतै सोइ ॥१॥
महला २ ॥
सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥

पउड़ी ॥
जतिु सेवएि सुखु पाईऐ सो साहबिु सदा सम्हालीऐ ॥
जतिु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी कउि घालीऐ ॥

मंदा मूलि न कीचई दे लमी नदरि निहालीऐ ॥

जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥

किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥

(छंत) जिनी गुरमुखि नामु ध्याया तिना फिरि बिघिनु न होयी राम राजे ॥

जिनी सतिगुरु पुरखु मनायआ तिन पूजे सभु कोई ॥

जिनी सतिगुरु प्यारा सेव्या तिना सुखु सद होई ॥

जिना नानकु सतिगुरु भेट्या तिना मिल्या हरि सोई ॥२॥

सलोकु महला २ ॥

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥

गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥

नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥

महला २ ॥

जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥

बीजे बिखु मंगै अम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥२॥

महला २ ॥

नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥

जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥

साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥

कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥

महला २ ॥

नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥

पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥

महला २ ॥

होइ इआणा करे कमु आणि न सकै रासि ॥

जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥

पउड़ी ॥

चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥

हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥

खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥

वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥

जसि दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि॥

नानक हुकमु न चलई नालि खिसम चलै अरदासि॥२२॥

(छंत) जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन हरि रिखणहारा राम राजे ॥

तिन की निन्दा कोयी क्या करे जिन हरि नामु प्यारा ॥

जिन हरि सेती मनु मान्या सभ दुसट झख मारा ॥

जन नानक नामु ध्याया हरि रिखणहारा ॥३॥

सलोकु महला २ ॥

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥

नानक सा करमाति साहिबि तुठै जो मिलै ॥१॥

महला २ ॥

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥

नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥

पउड़ी ॥

नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥

आपि किराए साखती फिरि आपि किराए मार ॥
इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥
आपि किराए करे आपि हिउ कै सिउ करी पुकार ॥
नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिसि ही करणी सार ॥२३॥

(छंत) हरि जुगु जुगु भगत उपायआ पैज रखदा आया राम राजे ॥

हरणाखसु दुसटु हरि मार्‍या प्रहलादु तरायआ ॥
अहंकारयि निन्दका पिठि देइ नामदेउ मुखि लायआ ॥
जन नानक ऐसा हरि सेव्या अंति लए छडायआ ॥४॥६॥१३॥२०॥

सलोकु मः१ ॥
आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥
इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥
इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥
तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥

महला २ ॥

आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥

तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥

किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥

पउड़ी ॥

वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥

सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु स्मबाहि ॥

साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥

नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥

सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु